International Journal of Applied Research 2015; 1(7): 94-96

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(7): 94-96
www.allresearchjournal.com
Received: 15-04-2015
Accepted: 17-05-2015

डॉ. शिव दत्त शर्मा
अध्यक्ष हिंदी विभाग रा. महा. वि. ढलियारा कांगड़ा। हि. प्र., ***भारत.***

Correspondence:
डॉ. शिव दत्त शर्मा
अध्यक्ष हिंदी विभाग रा. महा. वि. ढलियारा कांगड़ा। हि. प्र., ***भारत.***

वैशाली की नगरवधु ... एक मूल्यांकन

डॉ. शिव दत्त शर्मा

आचार्य चतुरसेन बहुप्रतिभासंपन्न एवं समृद्ध साहित्यकार रहे हैं। उन्होने चालीस वर्षों तक कठिन परिश्रम करते हुए विस्तृत साहित्य का निर्माण किया। चतुरसेन की साहित्य रचना का मुख्य स्वर मानवतावादी रहा है। उन्होने अपने उपन्यास में यही भावना उजागर की है। वे लिखते हैं, ''मैं उपन्यास रचना करता हूँ अपने लिए। अपनी आत्मसंतुष्टि के लिए। उसमें न प्रचार भावना है, न वैर भावना केवल मनुष्य के प्यार करने और उसे सुखी और भयहीन देखने की मेरी कामना रहती है। वही कामना मेरे साहित्य की प्रेरक शक्ति है।''[1]

''वैशाली की नगरवधु'' उपन्यास आचार्य जी का ऐतिहासिक उपन्यास है। इसका प्रकाशन 1948 में हुआ।''[2] आचार्य जी ने इतिहास के नियमित अध्ययन से प्राप्त रस को इतिहास रस मानकर इतिहास के यथार्थ को साहित्य में सुन्दर ढ़ग से प्रस्तुत किया है। इतिहास जीवन का सत्य है और जीवन का सत्य साहित्य के सत्य से भिन्न है। ''जो साहित्यकार मन के भाव से छौटे से सत्य को विना विकृत किए इतना विशाल करके प्रकट करने का सामर्थ्य रखता है कि सारा संसार उसे देख सके और इतना पक्का रंग भरता है कि शताब्दियों– सहस्राव्दियां बीत जाने पर भी वह फीका न पड़े, वही सच्चा और महान साहित्यकार है।''

आचार्य चतुरसेन ने वैशाली की नगरवधु उपन्यास में नारी का सही चित्रण किया है।[3], ''

मनुष्य साहित्यकार समाज का एक उपयोगी अंग होने के साथ–साथ एक संवेदनशील प्राणी भी होता है जो कि समाज को बदलने की अपेक्षा रखता है। उसका अपना कोई परिवार, समाज, देश व राष्ट्र नहीं होता, वल्कि वह तो अतिमानवों का निर्माण करके उन्हे मानवादर्श के धरातल पर स्थापित करता है। साहित्यकार के दायित्व पर चर्चा करती हूई महादेवी वर्मा जी लिखती है, '' माता जिस प्रकार आस्था के बिना अपने रक्त से संतान का सृजन नहीं कर सकती, धरती जिस प्रकार ऋतु के बिना अंकुर को विकास नहीं दे सकती, साहित्यकार भी उसी प्रकार गंभीर विश्वास के बिना अपने जीवन को अपने सृजन में अवतार नहीं दे पाता।''[4]

चतुरसेन जी ने इस उपन्यास में अपने को सभ्य एवं श्रेष्ठ कहलाने वाली जातियों के काले कारनामों से संपूर्ण मानव जन को अवगत करवाया है जिन्हाने समाज में, कुरीतियों, विसंगतियों, रूढ़ियों को जन्म दिया जिनके कार्य नीच, भद्दे और अंहकार झूठा था। [5]

आचार्य चतुरसेन के उपन्यासों में नारी अपनी समग्रता में चित्रित हूई है। अपने महनीय गुणों के कारण वह नारी जाति का उद्धार करती है। वह आदर्श पत्नी, ममतामयी मॉ, परिश्रमी और स्नेहमयी वहन, बेटी रूप में संपन्न, त्यागी एवं बलिदानी नारी के रूप में हमारे सामने आती है जो अपने परिवार, देश के लिए मूल बलिदान देती है। नारी संम्पूर्ण सृष्टि का आधार है और सृजनकर्त्ता भी, परन्तु पुरूष के समान उसका मूल्यांकन नहीं रहा है। इस उपन्यास में दर्शाया गया है कि किस प्रकार नारी की भावनाओं, आकांक्षाओं को दबाये जाने पर या हीन समझकर उसे प्रताड़ित किया जाता है या उसकी इच्छाओं के विरूद्ध उसे कार्य करने को विवश किया जाता है।

नारी अक्षमता की पहचान

आचार्य चतुरसेन के उपन्यास ''वैशाली की नगरवधु'' में नारी अक्षमता की पहचान बनकार प्रस्तुत हूई है। इसमें आम्रंपाली जो इस उपन्यास की नायिका है उसे अत्यधिक सुन्दर होने के कारण संपूर्ण नगर की नगरवधु बना दिया जाता है। उनसे नारीत्व के सारे अधिकार छीन लिए जाते हैं फिर भी वह जीने को विवश है । सभी नारियां अक्षमता की पहचान है इनके पास इतनी क्षमता नहीं कि उस समय वह इन सब विवशताओं को तिलांजली देकर स्वतन्त्रता का जीवन जी सके।

नारी का अप्रतिम सौंदर्य एवं अभिशाप

आम्रंपाली वचपन में कुचुक पहनने, जो दूसरों ने भी पहना था की इच्छा जाहिर करती है परन्तु उसके पिता के पास इतना धन नहीं होता। उसकी आंखे आंसुओं से भर जाती हैं वह चिन्तित अवस्था में सोंचने लगता है कि एक बार फिर वैशाली में जाकर पुरानी नौकरी की याचना की जाए वह बृद्ध हो चुका था परन्तु उसके लिए कन्या का विचार सर्वोपरि था, फिर भी उसमें बल था। उसकी चिन्ता का कारण केवल यही नहीं था उसे चिंता थी बालिका के अप्रतिम सौंदर्य की सहस्राधिक बालिकाएं भी उस पारिजात कुसमतुल्य कुंदकलिका के समान नहीं थी। किसी फूल में इतनी खुशवू, कोमलता एवं सौंदर्य नहीं था उसे चिंता थी कि वैशाली गणतंत्र के उस विचित्र कानून के अनुसार उसकी कन्या विवाह से बंचित करके कहीं ''नगरवधु'' न बना दी जाए।

कुलवधु के अधिकारों से वंचित नारी

चतुरसेन के उपन्यास ''वैशाली की नगरवधु'' में आम्रंपाली ऐसी दुःखित नारी है जिसे बलात् नगरवधु बना दिया जाता है। वह उस कानून को धिक्कृत कहती है जो कानून उसे नगरवधु बनने पर विवश करता है।

नारी आत्मगौरव को धिक्कृत कानून के पंक में डुबोने में अभिशप्त

जब आम्रंपाली को उसके अप्रतिम सौंदर्य के कारण वैशाली गणराज्य दृवारा संपूर्ण नगर की ''नगरवधु'' बना दिया जाता है। उसकी अत्यधिक सुंदरता ही अपराध बन जाती है। इसी अपराध के कारण वह जीवन के गौरव को लांछना अैर अपमान के पंक में डुबोने को अभिशप्त हो जाती है।

समाज में पुरूषों के वर्चस्व के समक्ष नारी परतंत्र

''वैशाली की नगरवधु'' उपन्यास के समकालीन समाज में पुरूषों का वर्चस्व स्त्री से ज्यादा था। नारी को पुरूष की दासी माना जाता था। चतुरसेन जी ने इसी तरह नारी संवेदना को प्रकट किया है। पुरूष चाहे जितने विवाह करे पंरतु नारी किसी एक की पत्नी ही हो सकती थी, केवल एक अप्रतिम सुंदरी को छोड़कर। अत्यधिक सुंदर स्त्री को पुरूष समाज द्वारा ही नगरवधु बनाया जाता है। आम्रंपाली को जब बलात् नगरवधु बनने पर विवश किया जाता है तो वह परिषद् के समक्ष तीन शर्तें रखती हैं इससे गणपति आद्रकंठ से कहता है, ''तुम चिरंजीविनी हो ओ, देवी अंवपाली। तुम अमर होओ! ज्नपद1 की रक्षा का भार स्त्री पुरूष दोनों पर है। परन्तु सदैव इस पर अपनी बलि देते आएं है। स्त्रियों को भी बलि देनी पड़ती ।

नारी वीरता एवं साहस की प्रतिमूर्ति

आचार्य चतुरसेन जी ने नारी का वीर एवं साहसी रूप भी इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। इसका उदहारण अंबपाली और कुंडनी है। अंबवाली भावुक थी, उसका स्वभाव भी आग्रही था और जीवन आशामय, साथ में साहसी ह्रदय भी था। जब उसे वैशाली नगरवधु बनाने की घोषणा होती है तो वह गण के समक्ष निडरता से तीन शर्ते रखती है उसका मानना है कि वैशाली के जिस जनपद ने उसे इस और जाने को विवश कर दिया है उसे अपने समर्थ चरणों से रौंद, रौंद कर पद दलित करना चाहिए। उसके विचारों में साहस होता है जिससे उसकी सांसे गंभीर हो जाती है। वह दोनों से होंठ दवाकर कहती है, ''मैं वैशाली के स्त्रैण पुरूषों से पूरा बदला लूंगी। मैं अपने स्त्रीत्व का पूरा सौदा करूंगी। मैं अपनी आत्मा का हनन करूंगी और इन लोलुप ग्रहों को इन्ही की प्रतिष्ठा और मर्यादा के दामों पर बेचूंगी।'' कलिगंसेना भी इसका उदाहरण है। कलिंगसेना गंधार नरेश की इकलौती पुत्री और तक्षशिला की स्नातिका उच्च शिक्षा प्राप्त तर्कशील युवती है। वह पिता की इच्छा के लिए बूदे कोसल नरेश प्रसेजित् से विवाह करने को तैयार हो जाती है।

वैशाली जनपद के लिए स्त्रीत्व की वलि

जब किसी स्त्री के साथ ऐसा होता है तो मन विचलित एवं दुःखी होता है यह भी नारी के प्रति संवेदना है। अंबपाली को वैशाली की ''नगरवधु'' बनाकर उससे स्त्रीत्व के सारे अधिकार छीन लिए जाते हैं। उनकी बलि वह वैशाली जनपद के लिए दे देती है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए वृद्ध गणपति कहता है, ''देवी अम्बपाली, तुम रोष अंसतोष को त्याग दो।

भोग्या बनने पर विवश नारी

आचार्य चतुरसेन के उपन्यास में नारी संवेदना का एक ओर रूप है, नारी का भोग्या रूप, जिसे उसे विवशता वश बनाया जाता है। इसका उदाहरण है क्रीतादासी। क्रीतादासी अपने तीन वर्षीय पुत्र के साथ दासों के हट्ट में विक्रय के लिए पहुॅचती है। व्यापारी द्वारा पैरों में लोहे की श्रृंखला डालने पर वह विरोध करती है। व्यापारी जब चावुक दिखाता है तो वह विरोध करती है। व्यापारी जब चाबुक दिखाता है तो वह भोलेपन में निडर होकर तेरे मालिक ने कहा था कि वैशाली में तेरा आदमी है, वहीं से भला मानस तुझे ले जाएगा!''[1] इससे नारी की दयनीय दशा का पता चलता है कि राजा लोग अपनी काम लिप्सा के शांत करने के लिए स्त्रियों का भोग कर उन्हे पंडितों को दान कर देते थे और यह पंडित इनके साथ पशुवत् व्यवहार कर बाजार में इनका विक्रय कर इन्हे नारकीय जीवन यापन करने पर विवश करते थे।

नारी का प्रेरणात्मक रूप

''वैशाली की नगरवधु'' उपन्यास में नारी प्रेरणारूप में भी प्रस्तुत हूई है। 6 इसका उदाहरण पद्मावती है पद्मावती वाणिज्य ग्राम के सुदर्शन सेट्ठी की पुत्री और राजगृह_के आदि सुकुमार सेट्ठी पुत्र शालिभद्र की पत्नी है। एक बार जब उसे लगता है कि उसके पति शालिभद्र कुछ बेचान और उदास से रहने लगे हैं तो महावीर के राजगृह में पधारने पर वह कहती है, ''आर्य पुत्र सुना है कि राजगृह में एक सर्वजित् श्रमण आए हैं, जो सब भांति शुद्ध–बुद्ध–मुक्त है। यह सर्वजित् महावीर है अल्पभाषी है। सेविक मगधराज ने इनकी सेवी की है।''[7] वह पति की मनोभावनाओं को जानकर अपनी सास से उनके विषय में बताती है कि हमें महावीर की शरण में जाना चाहिए। माता वैसा ही करती है और शालिभद्र भिक्षुक बनने को तैयार हो जाता है।

नारी पुरूष एक दूसरे के पूरक

स्त्री और पुरूष स्वतंत्र व्यक्तित्व होते हुए भी परस्पर अभिन्न है। जहॉ पुरूष में कर्मक्षेत्र, बुद्धिचातुर्य, शारीरिक बल एवं बहुआयामितता की क्षमता है वहीं नारी में मानसिक सौंदर्य, प्राणशक्ति, कर्मक्षेत्र में सक्रियता, संस्कारशीलता, प्रेम निष्ठा और आत्मविस्तार की असीम शक्ति है। इस धरातल पर पुरूष और नारी दोनों को समान अस्तित्व व्यक्त करते हुए ''चतुरसेन'' कहते हैंः–

''पुरूष हिरण्य गर्भ है'' ''नारी विराट प्रकृति है''''पुरूष स्वर्ग है'' ''नारी पृथ्वी है'' ''पुरूष तपशक्ति का रूप है''

ये गुण और मूल्य ही स्त्री पुरूष के मूल धर्म है जिनके मिलने से दोनों सुखी जीवन यापन कर सकते हैं। स्त्रियां हमारा घर हैं, परिवार है, हमारे घर की मर्यादा है। हमे उन्हे अपने से कमजोर, हीन एवं नीच नहीं समझना चाहिए। क्योंकि वे हमें अस्तित्व प्रदान करती है।

कर्तव्य परायण एवं पतिव्रता नारी

नारी संवेदना का यह रूप भी चतुरसेन ने प्रस्तुत किया। नारी कर्तव्य परायन और पतिव्रता होकर भी नारी संवेदना का स्त्रोत बनती है इसका उदाहरण मल्लिका है। मल्लिका कौशल नरेश प्रसेनजित की राजमाहिषी हैं वह पुरूष की कामुकता का शिकार

होती है। वह हीन जाति की होते हुए भी अपने रूप और गुण के कारण प्रसेनजित द्वारा अंतः पुर में लाई जाती है।

नारी विषकन्या बनने पर विवश

नारी को उसकी इच्छा के विरूद्ध विषकन्या बनने पर विवश किया जाता है। यह विवशता भी नारी के प्रति संवेदना व्यक्त करती है। कुडनी एक ऐसी नारी है जिसे अपने ही पिता द्वारा अपने स्वार्थ के लिए जबरदस्ती विषकन्या बनाया जाता है। इसका पता इस बात से चलता हे, जब वह कहती है, ''नहीं पिता, अब नहीं, मैं सहन न कर सकूंगी।''[9] उसके पिता आचार्य ने कठोर मुद्रा से उसकी ओर जाज्वल्य नेत्रों से देखा, और कहा, ''सावधान।[10] उन्होने हाथ कों चमड़े का चाबुक पकड़ा और उसे दंड लेने के लिए डराया और विवश किया। इन से स्पष्ट होता है कि कुण्डनी की विषकन्या बनने के लिए मजवूर किया गया।

मातृत्व सुख से वॉचित नारी एवं वात्सल्यमयी इस उपन्यास में नारी वात्सल्यमयी मॉ के रूप में भी प्रस्तुत हूई है। उसका जीता जागता उदाहरण है आर्य मांतगी। वह ब्राहमण गोबिन्द स्वामी की पुत्री और वर्षकार की प्रेमिका है। इसका लालन–पालन मगध राजगृह में बिबंसार के साथ ही होता है। यौवन की दहलीज पर पॉव रखने पर इसका नारीत्व निखर उठता है। इसका युवक वर्षकार से आंतरिक अनुराग होता है लेकिन पिता की आज्ञा न मिलने से वह प्रणय सूत्र आबदध नहीं हो पाती।

कुल मर्यादा की रक्षा के लिए प्रेम बलिदान

नारी संवेदना का एक रूप यह प्रदर्शित होता है कि जिसे वह प्रेम करती है उसे अपना जीवनसंगी नहीं बना पाती उसके आगे कुल की मर्यादा है। चंद्रभद्रा ऐसी ही एक नारी है। वह कामुक एवं विलासी चंपा नरेश की सुपुत्री है। उसका स्वभाव पिता से विल्कुल विनीत है, मर्यादा, मानवीय गुणों से संपन्न है। वह व्यवहारकुशल व सच्ची प्रेमिका का दायित्व अपने कंधों पर लेता है। तभी वह सोम के प्रति आकर्षित होती है। वह उसे मन में ही जन्म–मरण का साथी मान लेती है। सोम और कुडनी द्वारा मुक्त हो जाने पर वह साकेत के साथ सुखपूर्वक रहने लगती है तो उसे सोम का वियोग असह्य लगता है। सोम जब राजकुमारी से मिलने पंहुचता है तो वह कहती है, '' कि आज्ञा लिए विना यहां मत आना भद्र। यही उत्तम है, धर्म सम्मत है। गुरूजन–अनुमोदित है।

कलिंगसेना अपने बलिदान की सार्थकता बताते हुए कहती है, '' एक गान्धार पुत्री के आत्मदान से यदि युद्ध से मुक्ति मिले तो यह अधिक युक्तियुक्त है। इसी से पिता से मैने सहमति प्रकट की और इस प्रकार मैने एक बहुत बड़े संघर्ष से गान्धारों को बचा लिया।''[11] छोटी सी उम्र में ही उसने उस समय बलिदान का ऐसा अनूठा उदाहरण प्ररूतुत किया। उस युग में राजमहलों में पलने वाली कन्या भी सुरक्षित न थी तो आम नारी का क्या हाल होगा?

समग्रतः कहा जा सकता है कि आचार्य चतुरसेन ने प्राचीन रूढ़ियों, कुप्रथाओं, अत्याचारों के कारण समाज की स्थिति .किो देखकर अपने साहित्यिष्क कर्त्तव्य को समझते हुए ''वैशाली की नगरवधु'' के रूप में जो औपन्यासिक कृति भारतीय समाज के समक्ष रखी वह अद्वितीय है। इस उपन्यास द्वारा नारी–स्वभाव में संवेदना का स्वर भरकर संपूर्ण समाज को उससे अवगत करवाने का जो कार्य चतुरसेन शास्त्री ने किया वह चिरस्मरणीय रहेगा। चतुरसेन के उपन्यास वैशाली की नगरवधु के लगभग समस्त नारी–पात्र संवेदना से संपन्न है जिनकी संवेदना उनके त्याग, बलिदान, स्त्रीत्व अपहरण, वैश्या जीवन, मातृत्व सुख से वंचित जीवन आदि रूपों में स्पष्ट होती है। नारी वह शक्ति है जब वह सब कुछ सहन कर और सबके दुःख दर्द को अपना बना लेती है परन्तु जब उसके आत्मसम्मान को ठेस लगती है तो वह काली का रूप धारण करके दुष्टों का नाश कर देती है।

समाज में उपस्थित भारतीय नारी को संवेदना का इतिहास हमारे इतिहास ग्रंथों में प्रस्तुत है। उपन्यास की नायिका अंबपाली संवेदना का मुख्य रूप है। नारी मानवीयता का आधार है उसे अधिकार की अपेक्षा सहयोग की आवश्यक्ता अधिक है। आचार्य चतुरसेन ने नारी के प्रतिष्ठा को चोट पहुॅचाने वाली प्रत्येक प्रवत्ति को उजागर कर इनमें उत्पन्न संवेदना को सभी समस्याओं का मूल माना है।

सन्दर्भ सूची

1. आचार्य चतुरसेन, गोली पृ0 7
2. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु, पृ0 25
3. आचार्य चतुरसेन, वयंरक्षामः, पृ0 9
4. महादेवी वर्मा, अक्षरा, 50 अक्तूबर, दिसंबर 2000, पृ0 112
5. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु, पृ0 5
6. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु पृ0 211
7. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु पृ0 143
8. आचार्य चतुरसेन, अदल–वदल पृ0 81
9. आचार्य चतुरसेन वैशाली की नगरवधु पृ0 250
10. आचार्य चतुरसेन वैशाली की नगरवधु पृ0 50
11. आचार्य चतुरसेन, वैशाली की नगरवधु, पृ0 173